नजात नामा

आला हज़रत इमाम-ए-अहले सुन्नत
इमाम अहमद रज़ा
रद़ियल्लाहो तआला अन्हो

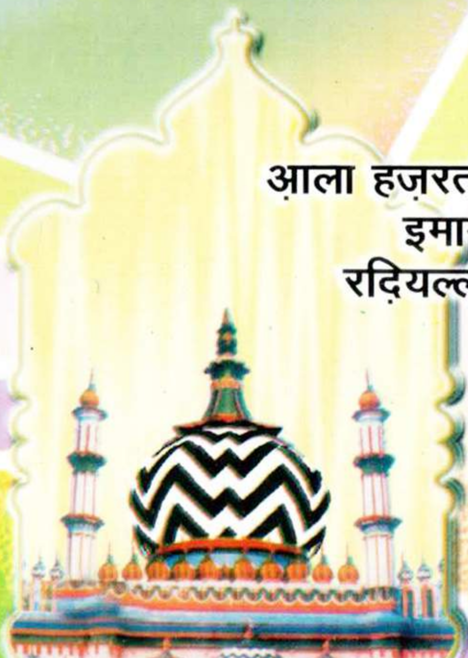

रज़ा एकेडमी मुंबई-3

मैय्यत के कफ़न पर कलमा लिखने, कब्र में तबर्रूकात, अहेदनामा, सिजराह वगैरा रखने के सुबूत में

الحرف الحسن فى الكتابة على الكفن

का हिन्दी तरजमा

नजात नामा

-: तसनीफ़ :-

अअ्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादिरी
फ़ाज़िले बरैलवी (अलैहिर्रहमा)

-: बफ़ैज़ :-

हुज़ूर मुफ़्तिए अअ्ज़म हज़रत अल्लामा शाह
मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा क़ादिरी नूरी (अलैहिर्रहमा)

नाशिर :

रज़ा एकेडमी

२६, कांबेकर स्ट्रीट, मुम्बई-४०० ००३.
फोन नं.: ३७३७६८१-३७०२२९६

सिलसिलए इशाअत नं. २४७

किताब ———— :	**रहमते क़ब्र**
लेखक ———— :	आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ
तरजमा व तलख़ीस ———— :	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ अशरफ़ी रज़वी
पेशकश ———— :	मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन रज़वी साहब,
पहला ऐडीशन ———— :	१९९९
तादाद ———— :	
नाशिर ———— :	रज़ा एकेडमी, २६, कांबेकर स्ट्रीट, मुम्बई-४०० ००३.

अअ्ला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी अ़लैहिर्रहमा की तस्नीफ़ कर्दा अनवारुल बशारति फ़ी मसाइलिल हज्जे वज़्ज़ियारति यानी हज्ज व ज़ियारत अब हिन्दी में भी शाया होकर मंज़रे आम पर आ चुकी है।

***नाशिर* : रज़ा एकेडमी**

२६, कांबेकर स्ट्रीट, मुम्बई-३. फोन नं.: ३७३७६८१-३७०२२९६

मिलने का पता : फ़ारूक़िया बुक डिपो

४२२, मटिया महल, जामेअ मस्जिद, दिल्ली - ६ फ़ोन - ३२६६०५३

मस्लके अअ्ला हज़रत पर मज़बूती से क़ाएम रहिए यही सिराते मुस्तक़ीम है। मस्लके अअ्ला हज़रत को समझने के लिए इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी की किताबों का मुतलआ़ कीजिए।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

मस्अला

अज़ :- मारहेरह मुतहरह बाग पुख़्ता मुर्सिला हज़रत साहबज़ादह सैय्यद मुहम्मद इब्राहीम साहब,

1, रज्जब 1308 हिजरी

क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मस्अले में कि कफ़न का टुकड़ा जो किसी मुकद्दस मकाम से आए (या किसी बुज़ुर्ग की चादर वगैरा का टुकड़ा हो) और उस पर आयाते कलामुल्लाह (क़ुरआने अज़ीम की आयतें) व हदीसे वगैरा लिखी हो वोह मैय्यत को पेहनाना कैसा है और सिजरह कब्र में रखना कैसा है ?--- بینوا توجروا. ———

अलजवाब

بسم اللہ الرحمن الرحیم

الحمد للہ الذی منّ علینا بذکرہ فی حیاتنا و لبعد الممات وفتح علینا فی التوسل بآیاتہ وشعائرہ ابواب البرکات والصلوۃ والسلام علی من تبرک بآثارہ الکریمۃ الاحیاء والاموات وحی ویحیی بامطار فیوضہ العظیمۃ کل موات وعلی آلہ وصحبہ واھلہ وحزبہ عدد کل ماض وآت ۰

यहाँ पर चार मकाम हैं (1) फ़िकहे हनफ़ी से कफ़न पर लिखने का सुबूत, के सब से बेहतर क़ब्र में सिजरह रखने का सुबूत होगा - और उस के मोअईद (Corrobortive evidence) में अहादीस व रिवायात, (2) अहादीस से इस का सुबूत के पहले के ज़माने में कफ़न दिया गया या मैय्यत के बदन पर रखा गया और उसे तअज़ीम के लाएक न जाना, ! (3) बाज़ वोह शाफ़िया (शाफ़अई हज़रात) जो बाद वाले ज़माने में हुए उन्होनें जो कफ़न पर लिखने में बे तअजीमी ख़्याल की उस का जवाब, (4) क़ब्र में सिजरह रखने का बयान, ।— وباللہ التوفیق ——

पहला मकाम

हमारे उलमा-ए-किराम ने फ़रमाया के मैय्यत की पेशानी या कफ़न पर अहेद नामा लिखने से उस के लिए मगफ़ेरत की उम्मीद है ।
(1) इमाम अबूलकासिम सफ़्फ़ार जो शागिरद है, इमाम नसीर बिन याहयाह के और येह शागिरद है, शेखुल मज़हब सैय्यदना इमाम अबू युसूफ़ व मुहरीरूल मज़हब सैय्यदना इमाम मुहम्मद के, رحمہم اللہ تعالیٰ उन्होंने इस पर तफ़सील से बयान व रिवायत किया । (2) इमाम नसीर ने अमीरूलमोमेनीन फ़ारूके आज़म -رضی اللہ تعالیٰ عنہ— के अमल से इस की ताईद (Corroboration) की और इस पर मज़बूत दलील काएम की । (3) इमाम मुहम्मद बज़्ज़ारी ने "वजीज़ करवरी" से (4) और अल्लामा मुद्दाकिक इलाई ने "दुर्रे मुख़्तार" में उस पर (यानी मैय्यत के साथ अहेद नामा रखने या उस की पेशानी पर लिखने की दलीलों पर) भरोसा फ़रमाया । (5) इमामे फ़कीयह इब्ने ऊजैल वगैरा का भी येही मअमूल (हमेशा का अमल) रहा । (6) बल्कि इमामे अजल ताऊस ताबअई जो सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास -رضی اللہ تعالیٰ عنہم- के शागिर्द है उन से रिवायत है कि उन्होंने अपने कफ़न में अहेद नामा लिखे जाने की वसियत फ़रमाई और वसियत के मुताबिक उन के कफ़न में लिखा गया । (7) बल्के हज़रत कसीर बिन अब्बास बिन अब्दुल मुत्तालिब—رضی اللہ تعالیٰ عنہم- ने की रसूलुल्लाह—صلی اللہ علیہ وسلم—के चचा के बेटे और सहाबी है खूद अपने कफ़न पर कलमा-ए-शहादत लिखा ।
(8) बल्कि इमाम तिर्मिज़ी हकीमे इलाही सैय्यदी मुहम्मद बिन अली जो इमाम बुखारी के ही ज़माने के हैं, "नवादरूलऊसूल" में रिवायत की के खूद हुज़ूर पुरनूर सैय्यदे आलम रसूलुल्लाह—صلی اللہ علیہ وسلم ———
ने फ़रमाया -------

जो येह दुआ किसी परचे (कागज़) पर लिख कर मैय्यत के सीने पर कफ़न के नीचे रख दे, उसे अज़ाबे क़ब्र न हो, न मुन्कर नकीर नज़र आए, और वोह दुआ येह है --------	من كتب هذا الدعاء وجعله بين صدر الميت وكفنه فى رقعة لم ينله عذاب القبر ولا يرى منكرا ونكيرا وهو هذا

لا اله الا الله والله اكبر لا اله الا الله وحده لا شريك له لا اله الا الله له الملك وله الحمد لا اله الا الله ولا حول ولا قوة الا بالله العلى العظيم

और "तिर्मिज़ी" में सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर-رضى الله تعالى عنه-से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلى الله تعالى عليه وسلم ने फ़रमाया, जो हर नमाज़ में सलाम के बाद येह दुआ पढ़े -----

अहेद नामा

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اِنِّىْ اَعْهَدُ اِلَيْكَ فِىْ هٰذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا بِاَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ فَلَا تَكِلْنِىْ اِلٰى نَفْسِىْ فَاِنَّكَ اِنْ تَكِلْنِىْ اِلٰى نَفْسِىْ تُقَرِّبْنِىْ مِنَ السُّوْءِ وَتُبَاعِدْنِىْ مِنَ الْخَيْرِ وَاِنِّىْ لَا اَثِقُ اِلَّا بِرَحْمَتِكَ فَاجْعَلْ رَحْمَتَكَ لِىْ عَهْدًا عِنْدَكَ تُؤَدِّيْهِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ

फ़रिश्ता उसे लिख कर मोहर (Seal) लगा कर क़ियामत के लिए उठा रखे। जब अल्लाह तआला उस बन्दे को क़ब्र से उठाए। फ़रिश्ता वोह लिखा हुआ कागज़ साथ लाए और निदा की जाए (पुकारा जाए) अहेद वाले कहाँ हैं। उन्हें वोह अहेद नामा दे दिया जाए।

इमाम (तिर्मिज़ी) ने इसे रिवायत कर के फ़रमाया --- وعن طاؤس انه امر بهذه الكلمات فكتبت فى كفنه यानी इमाम ताऊस की वसियत

से येह अहेद नामा उन के कफ़न में लिखा गया ।

इमामे फ़क़ियाह इब्ने उजैल, ने इसी दुआए अहेद नामा की निसबत (बारे में) फ़रमाया --------------

"जब येह दुआ लिख कर मैय्यत के साथ क़ब्र में रख दें तो अल्लाह तआला उसे (मैय्यत को) नकीरैन के सवाल व अज़ाबे क़ब्र से अमान (हिफ़ाज़त) दे ।"

اذا كتب هذا الدعاء وجعل مع الميت في قبره وقاه الله فتنة القبر وعذابه —

यही इमाम (इब्ने उजैल) फ़रमाते है ---------

"जो येह दुआ मैय्यत के कफ़न में लिखे अल्लाह तआला क़ियामत तक उस से अज़ाब उठाए" और वोह' दुआ येह है ----------

من كتب هذا الدعاء في كفن — الميت رفع الله عنه العذاب الى — يوم ينفخ في الصور وهو هذا -

— اللهم انى اسألك يا عالم السر يا عظيم الخطر —
— يا خالق البشر يا موقع الظفر يا معروف الاثر يا ذا الطول والمن يا —
— كاشف الضر والمحن يا اله الاولين والآخرين فرج عنى همومى و —
— اكشف عنى غمومى وصل اللهم على سيدنا محمد وسلم —

(10) इमाम इब्ने हजर मक्की ने अपने फ़तावए में एक तसबीह की निस्बत जिसे कहा जाता है कि उस की फ़ज़ीलत उस की बरकत मशहूर व मअरूफ़ हैं बाज़ उलमा-ए-दीन से नक़्ल किया के -------

जो इसे लिखकर मैय्यत के सीने और कफ़न के बीच में रख दे उसे अज़ाबे क़ब्र न हो - न मुन्कर नकीर उस तक पहुँचें और इस दुआ की तफ़सील बहुत अज़मत वाली है । और वोह चैन व राहत की दुआ है --------

من كتبه وجعله بين صدر الميت وكفنه لا يناله عذاب القبر ولا يناله منكر ونكير وله شرح عظيم وهو دعاء الانس -

سبحان من هو الجلال موحد وبالتوحيد معروف وبالمعارف موصوف
وبالصفة على لسان كل قائل رب وبالربوبية للعالم قاهر وبالقهر للعالم
جبار والجبروت عليم حليم وبالحلم والعلم رؤف رحيم سبحانه كما
يقولون وسبحانه كما هم يقولون تسبيحا تخشع له السموات والارض
ومن عليها وحمدي من حول عرشي اسمي الله وانا اسرع الحاسبين

मुसन्निफ़ (लेखक) "अब्दुल रज़्ज़ाक" और उन के ज़रिये "मुअजम तबरानी" और उन के ज़रिये से "हुलिया अबू नईम" में हैं -----

اخبرنا معمر عن عبد الله بن محمد بن عقيل ان فاطمة رضي الله تعالى عنها لما حضرتها الوفاة امرت عليا فوضع لها غسلا فاغتسلت تطهرت ودعت بثياب اكفانها فلبستها ومست من الحنوط ثم امرت عليا ان تكشف اذا هي قبضت وان تدرج كما هي في اكفانها فقلت له هل علمت احد فعل نحو ذلك قال نعم كثير بن عباس وكتب في اطراف اكفانه يشهد كثير بن عباس ان لا اله الا الله

हज़रत बुतूलुज़्ज़हरा (हज़रत फ़ातमा) رضي الله عنها ने इन्तेकाल के करीब अमीरूलमोमेनीन अली मुरतूज़ा كرم الله وجهه से अपने गुस्ल के लिए पानी रखवाया फिर नहाई और कफ़न मँगा कर पहेना और हुनूत की खूशबू लगाई - फिर मौला अली को वसियत फ़रमाई के मेरे इन्तेक़ाल के बाद कोई मुझे न खोले और इसी कफ़न में दफ़्न फ़रमादी जाऐं । मैंने पुछा किसी और ने भी ऐसा किया - कहा हॉ कसीर इब्ने अब्बास गवाही देता है कि ------- لا اله الا الله

वजीज़ इमाम करवरी "किताबुल इस्तहसान" में है ----

ذكر الامام الصفار لو كتب على جبهة الميت او على عمامته او كفنه عهد نامه يرجى ان يغفر الله تعالى للميت ويجعله امنا من عذاب القبر

इमाम सफ़्फ़ार ने ज़िक्र फ़रमाया कि अगर मैय्यत की पेशानी या इमामे या कफ़न पर अहेद नामा लिख दिया जाए तो उम्मीद है कि अल्लाह तआला उसे बख़्श दे और अज़ाबे क़ब्र से मामून (महफ़ुज़) करे

१ कसीर इब्ने अब्बास رضي الله عنه ने अपने कफ़न पर लिखा था –

फिर फ़रमाया ---

इमाम नसीर ने फ़रमाया येह मैय्यत के साथ अहेद नामा रखने के जाइज़ होने की रिवायत है और बेशक रिवायत में है कि फ़ारूके आज़म-رضی اللہ تعالیٰ عنہ--- के असतबल में कुछ घोड़ों की रानों पर लिखा हुआ था के وقف فی سبیل اللہ (येह अल्लाह की राह में वक़्फ़ हैं)

قال نصیر ھذہ روایۃ فی تجویز وضع عہد نامہ مع المیت وقد روی انہ کان مکتوبا علی افخاذ افراس فی اصطبل الفاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ حبیس فی سبیل اللہ تعالیٰ۔ ———

(11) "दुर्रे मुख़्तार" में है ------

मुर्दे की पेशानी या इमामे या कफ़न पर अहेद नामा लिखने से उस (मुर्दे) के लिए बख़्शिश की उम्मीद है - किसी साहब ने वसियत की थी के उन के पेशानी और सीने पर بسم اللہ الرحمن الرحیم लिख दें। उनकी वसियत के मुताबिक लिख दी गई, फिर किसी को ख़्वाब में नज़र आए - हाल पूछने पर फ़रमाया - जब मैं क़ब्र में रखा गया - अज़ाब के फ़रिश्ते आए - जब मेरी पेशानी पर بسم اللہ الرحمن الرحیم लिखी देखी - कहा तुझे अज़ाबे इलाही से अमान (छूट) है

کتب علی جبھۃ المیت او عمامۃ او کفنہ عہد نامہ یرجی ان یغفر اللہ للمیت۔ اوصی بعضھم ان یکتب فی جبھتہ وصدرہ بسم اللہ الرحمن الرحیم ففعل ثم رؤی فی المنام فسئل فقال لما وضعت فی القبر جاءتنی ملئکۃ العذاب فلما رأوا مکتوبا علی جبھتی بسم اللہ الرحمن الرحیم قالوا امنت من عذاب اللہ ———

(12) "फ़तावा कुबरा लिलमक्की" में है -----

बाज़ उलमा ने "नवादेरूल उसूल" इमाम तिर्मिज़ी से वोह हदीस नक्ल की जिस का निचोड़ येह हैं के येह दुआ असल रखती हैं और बाज़ (उलमा) ने नक़्ल किया के इमाम---

نقل بعضھم عن نوادر الاصول للترمذی ما یقتضی ان ھذا الدعاء لہ اصل وان الفقیہ ابن عجیل کان یأمر بہ ثم افتی بجواز کتابتہ قیاسا

फ़कियह इब्ने उजैल, उस के लिखने हुक्म फ़रमाया करते - फिर खूद उन्होंने उस के जाइज़ होने और लिखे जाने पर फ़तवा दिया इस क़यास (ख़्याल) पर के ज़कात के जानवरों पर लिखा जाता है لله येह अल्लाह के लिए है

على كتابته لله في نعم الزكاة ———

(13) उसी (फ़तावा कुबरा लिलमक्की) में है ---------

इस फ़तवे को बाज़ दूसरे उलमा ने बरकरार रखा (14) और उस की ताईद (Support) में बाज़ और उलमा ने नक़्ल किया के सही मकसद के लिए ऐसा करना पसंदीदा होगा अगरचा मालूम हुआ के गन्दगी उसे पहुँचेगी ।

واقره بعضهم بانه قيل يطلب فعله لغرض صحيح مقصود فابيح وان علم انه يصيبه نجاسة ———

— هذا ما اثره وفيه نظر كما سيأتي وبالله التوفيق —

दुसरा मक़ाम (अहादीस से सुबूत)

(15) हदीसे सही में हैं बाज़ अजलए (जलीलुल क़द्र) सहाबा ने के गालेबन सैय्यदना अब्दुल रहमान बिन औफ़ या सैय्यदना सअद बिन अबी वक़्क़ास—رضی اللہ تعالیٰ عنہم—है हुज़ूरे अकदस صلی اللہ علیہ وسلم से तहेबन्द अक्दस (लुंगी) (जो के एक बीबी ने बहुत मेहनत से खूबसूरत बुन कर हुज़ूर को पेश किया, और हुज़ूरे अक्दस—صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم—को उस की ज़रूरत थी) - हुज़ूर से माँगा - हुज़ूर अजूदुल अजूदीन صلی اللہ علیہ وسلم ने उन्हें अता फ़रमा दिया - सहाबा-ए-किराम ने उन्हें मलामत की (बुरा भला कहा) के उस वक़्त इस लुंगी शरीफ़ के सिवा हुज़ूरे अक्दस صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के पास और लुंगी न थी और आप जानते हैं कि हुज़ूरे अकरम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم कभी साएल (माँगने वालों) को न नहीं फ़रमाते - फिर आप ने क्यों माँग लिया - उन्होंने कहा वल्लाह (खुदा की कसम) मैंने

इस्तेमाल को न लिया - बल्कि इस लिए (लिया) कि उस में कफ़न दिया जाऊँ । हुज़ूरे अकदस—صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم—ने उन की इस नियत पर इन्कार न फ़रमाया - आखिर उसी में कफ़न दिए गए ।

"सही बुखारी" में हैं ------

باب من استعد الكفن.

فى زمن النبى صلى الله تعالى عليه وسلم فلم ينكر عليه حدثنا عبد الله بن
مسلمة فذكر باسناده عن سهل رضى الله تعالى ان امراة جاءت النبى
صلى الله تعالى عليه وسلم ببردة منسوجة فيها حاشيتها اتدرون ما البردة
قالوا الشملة قال نعم قالت نسجتها بيدى لاكسوكها فاخذها النبى صلى
الله تعالى عليه وسلم محتاجا اليها فخرج الينا وانها ازاره فحسنها فلان
فقال اكسينيها ما احسنها قال القوم ما احسنت لبسها النبى صلى الله
تعالى عليه وسلم محتاجا اليها ثم سألته وعلمت انه لا يرد قال انى والله
ما سألته لالبسها انما سألته لتكون كفنى قال سهل فكانت كفنه [1]

(तरजमा)[1]

(रसूलुल्लाह —صلی اللہ علیہ وسلم—के अहेद में कफ़न तैयार रखा तो आप ने उस पर एतराज न किया :- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुस्लमा, हज़रत सहल—رضی اللہ عنہ—से रिवायत करते है एक औरत रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم की खिदमत में एक बुनी हुई हाशियेदार चादर ले कर आई तुम जानते हो वोह चादर क्या हैं ? लोगों ने कहा शमला, बोले हॉ, उस औरत ने अर्ज़ किया येह चादर मैंने बुनी है और पहेन्ने के लिये आप की ख़िदमत में पेश कर रही हुं । आप ने उसे ले लिया और आप को उस की ज़रूरत भी थी आप उस का तहेबन्द (लुंगी) बॉध कर बाहर तशरीफ़ लाए किसी ने उस की तअरीफ़ की और कहा येह हमें इनायत हो जाए येह किस कदर अच्छी है, लोगों ने कहा तुम ने अच्छा नहीं किया, इसें रसूलुल्लाह —صلی اللہ علیہ وسلم ने जरूरत के लिए पहेना है और आप हुज़ूर से मॉग बैठे, हालाँकि आप को मालूम है कि हुज़ूर किसी का सवाल रद्द नही फ़रमाते, उस सहाबी नें कहा बखुदा मैंने इसे पहेनने के लिए नहीं कफ़न बनाने के लिए माँगा है, सहल رضی اللہ عنہ कहते है वोह चादर उस सहाबी के लिये कफ़न के तौर पर इस्तेमाल हुई ।)

(बुखारी शरीफ़, हदीस नं 1197 जि. 1 स. 491) ।फारूक।

(16) बल्कि खूद हुज़ूर पुरनूर—صلوات اللہ تعالیٰ وسلامہ علیہ—ने अपनी साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब या हज़रत उम्मे कुलसूम—رضی اللہ تعالیٰ عنہا—के कफ़न में अपना तेहबन्द अक़दस (लुंगी शरीफ़) अता किया और गुस्ल देने वाली बीबीयों (औरतों) को हुक्म दिया के उसे उन के बदन के नज़दीक रखें ।

सहीहैन (यानी बुखारी शरीफ़ व मुस्लिम शरीफ़) में उम्मे-अतीया—رضی اللہ تعالیٰ عنہا—से हैं ----

قالت دخل علینا رسول
اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ونحن نغسل ابنتہ فقال اغسلنھا ثلثا
اوخمسا او اکثر من ذلک ان رأتین ذلک بماء و سدر واجعلن فی
الاخرۃ کافورا او شیئا من کافور فاذا فرغتن فاذنی فلما فرغنا اذناہ
فالقی الینا حقوہ فقال اشعرنھا ایاہ ص1

(तरजमा नीचे)

(17) उलमा फ़रमाते हैं, येह हदीस मुरीदों को पीरों के लिबास में कफ़न देने की अस्ल (सुबूत में) है ।

"लिम्आत" में है ---------------- ھذا الحدیث اصل فی التبرک بآثار الصالحین ولباسھم کما یفعلہ بعض مریدی المشائخ من لبس القمصھم فی القبور ص2

1 उम्मे अतीया, रिवायत करती है, रसुलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए जब हम आप की साहबज़ादी को गुस्ल दे रहे थे, आप ने फ़रमाया इसे तीन या पाँच बार या इस से भी ज़्यादा पानी और बेरी के पत्तों से गुस्ल दो, और आखिर में काफ़ूर लगा दो, जब तुम लोग फ़ारिग हो जाओं तो हमें खबर करों, जब हम फ़ारिग हुए तो आप को बतलाया आप ने अपनी लुंगी दिया और फ़रमाया इसे पेहना दो ----------
(बुखारी शरीफ़, हदीस नं 1175 जि. 1 स. 485)

2 येह हदीस अस्ल (सुबूत) हैं बुज़ूर्गों की छोड़ी हुई चीज़ों व उन के लिबास से तबर्रूक हासिल करने में जैसा के बाज़ मुरीदों ने अपने मशाएख (पीरों का) लिबास कब्र में ले गए (यानी कफ़न के तौर पर इस्तेमाल किया) ! फारूक !

(18) यूँही हज़रत फ़ातमा बिन्त असद वालिदह माजेदह अमीरूल मोमेनीन मौला अली —كرم الله وجهه رضی الله عنها— को (हुज़ूर) ने अपनी कमीज़े अतहर में कफ़न दिया । رواه الطبرانی فی الکبیر و الا— و ابو نعیم فی الحلیه عن انس وسط و ابن حبان والحکم وصححه ——————
(रिवायत किया इसे "तबरानी" ने कबीर व अपनी अवसत में और "इब्ने हिब्बन" व "हकीम" व "अबू नुईम" ने अपनी हुलिया में हज़रत अनस बिन मालिक رضی الله عنه से)

(19) و ابو بکر بن ابی شیبة فی مصنفه عن جابر رضی الله تعالیٰ عنه (और अबू बकर बिन अबी शबयह मुस्ननेफ़ा में हज़रत जाबिर —رضی الله عنه— से)

(20) —و ابن عساکر عن علی رضی الله عنه— (और "इब्नेअसाकर" हज़रत मौला अली से)

(21) و الشیرازی فی الالقاب و ابن عبد البر و غیرهم عن ابی عباس رضی الله عنهم —————— (और "शीराज़ी" "अलकाब" में और "अब्दुल बर" वगैरा हज़रत अबी अब्बास رضی الله عنهم से रिवायत करते हैं) (22) और हुज़ूर —صلی الله علیه وسلم— ने) इरशाद फ़रमाया के मैं ने उन्हें (यानी हज़रत फ़ातमा बिन्त असद को) अपना कमीज़े मुबारक इसलिए पहेनाया के येह जन्नत के लिबास पहेने ।

"अबू नुईम" ने "मअरफ़तुल सहाबा" और "वयलमी" ने "मुस्नदुल" फ़िरदोस में बसनदे हसन हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضی الله تعالیٰ عنهما से रिवायत की -----

قال لما ماتت فاطمة ام علی رضی الله تعالیٰ عنها خلع رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم قمیصه والبسها اياه و اضطجع فی قبرها فلما سوی علیها التراب قال بعضهم یا رسول الله رأيناك صنعت شيئا

لم تقنعه باحد قال انی البستها قمیصی لتلبس من ثیاب الجنة و
واضطجعت معها فی قبرها لاخفف عنها من ضغطة القبر
انها کانت احسن خلق الله صنیعا الی بعد ابی طالب ۰

23) बल्कि हदीस की सही किताबों (बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबूदाऊद, नसाई, इब्ने माजा,) से साबित के जब अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक के सख़्त हुज़ूर सैय्यदुल महबूबिन صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم का दुश्मन था जिस ने वोह बुरा कलमा ——— لئن رجعنا الی المدینہ कहा जहन्नम वासिल हुआ (यानी मरा) हुज़ूर पुरनूर हलीमे गयूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने उस के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह رضی اللہ تعالیٰ عنہ इब्ने अब्दुल्लाह इब्ने उबई की दरख़्वास्त से जो कि सहाबी-ए-जलील व मोमिने कामिल थे उसके कफ़न के वास्ते अपना कमीज़े मुकद्दस अता फ़रमाया फिर उस की क़ब्र पर तशरीफ़ फ़रमा हुए । लोग उसे (क़ब्र में) रख चुके थे - हुज़ूर तैय्यब व ताहिर صلی اللہ علیہ وسلم ने उस खबीस को निकालवा कर लुआबे दहन (थोक मुबारक) उस के बदन पर ड़ाला और कमीज़े मुबारक में कफ़न दिया और येह बदला उस का था के "बदर" के रोज़ सैय्यदना अब्बास बिन अब्दुलमुत्तालिब — رضی اللہ تعالیٰ عنہما गिरफतार (होकर) आए (तो उस वक़्त आप) बरहेना (नंगे) थे और ज़्यादा लम्बे होने की वजह से किसी का कुरता ठीक न आता था तो उस ने उन्हें अपना कमीज़ दिया । हुज़ूर अज़ीज़े गुयूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने चाहा के मुनाफ़िक का कोई एहसान हुज़ूर के अहेले बैते किराम पर बगैर किसी कीमत के रह जाए। लिहाजा आपने दो कमीज़े मुबारक उस के कफ़न में अता फ़रमाई और मरते वक़्त वोह रियाकार कपट की पुरानी आदत से खूद अर्ज़ कर गया था कि हुज़ूर मुझे अपने कमीज़े मुबारक में कफ़न दें फिर उस के बेटे — رضی اللہ تعالیٰ عنہ — ने दरख्वास्त की और हमारे करीम علیہ افضل الصلوۃ والتسلیم (हुज़ूर) की पुरानी शान

व शौकत है की किसी का सवाल रद्द नहीं फ़रमाते ।

يا رسول

الله يا كريم يا رؤف يا رحيم اسألك الشفاعة عند المولى العظيم
والوقاية من نار الجحيم والامان من كل بلاء اليم لى ولكل من امن
لك وبكتابك والحكيم عليك من ولاك افضل الصلوٰة واكمل تسليم۔

फिर हिकमते इलाही हुज़ूर की इस बे मिसाल अता से येह हुई के हुज़ूर रहमतलल्लिआलामीन صلى الله تعالىٰ عليه وسلم की येह शाने रहमत देख कर (कि आप ने) अपने कितने बड़े दुश्मन को कैसा नवाज़ा है अब्दुल्लाह इब्ने उबई की कौम के हज़ार आदमी मुश्र्रफ़ ब इस्लाम हुए कि वाकई येह दरगुज़र करने वाले, रहमत वाले, माफ़ करने वाले और मगफ़ेरत करने वाले बरहक नबी के सिवा दूसरे तसव्वूर नहीं किये जा सकते ।

صلى الله تعالىٰ عليه وآله وصحبه اجمعين وبارك وسلم

सहीहैन (बुखारी व मुस्लिम) वगैरा सेहाह, व सुनन में है ---

عن ابن عمر رضى الله تعالىٰ عنهما ان عبد الله بن
ابى لما توفى جاء ابنه الى النبى صلى الله تعالىٰ عليه وسلم فقال يا
رسول الله اعطنى قميصك واكفنه فيه وصل عليه واستغفر
له فاعطاه النبى صلى الله تعالىٰ عليه وسلم قميصه الحديث۔ [1]

---

[1] इब्ने उमर रिवायत करते है, जब अब्दुल्लाह बिन उबई मरा तो उस का बेटा रसूलुल्लाह — صلى الله عليه وسلم — की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह — صلى الله عليه وسلم — हमें अपना कुरता अता फ़रमा दीजिए के हम उससे अब्दुल्लाह बिन उबई का कफ़न बनाए, उस पर नमाज़ पढ़े और उस के लिए दुआ-ए-मगफ़ेरत करें, रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने उन्हें अपना कुरता दे दिया ।

(बुखारी शरीफ़, हदीस नं 1189 जि. 1 स. 489) ! फारूक ।

24) और "सही बुखारी" वगैरा में है ------

عن جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ قال اتی النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم
عبداللہ بن ابی بعد ما دفن فنفث فیہ من ریقہ والبسہ قمیصہ صلہ

(तरजमा नीचे)

25) इमाम अबू उमर युसूफ़ बिन अब्दुलबर "किताबुल असतय्आब फ़ी मअरफ़तुल असहाब" में फ़रमाते हैं ------------

हज़रत अमीर मअवीया रضی اللہ تعالیٰ عنہ ने अपने इन्तेकाल के वक़्त वसियत में फ़रमाया ------------

यानी मैं सोहबते हुज़ूर सैय्यदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم से शरफ़याब हुआ - एक दिन हुज़ूरे अकदस صلی اللہ علیہ وسلم हाजत (पखाने) के लिए तशरीफ़ फ़रमा हुए हैं - मैं लोटा लेकर हुज़ूर पुरनूर के साथ साथ था - हुज़ूर पुरनूर ने अपने (कपड़ों के) जोड़े से, कुरता के हुज़ूर के बदन से लगा था मुझे इन्आम फ़रमाया - वोह कुरता मैंने आज के लिए छुपा रखा था ।

और एक रोज़ हुज़ूरे अनवर صلی اللہ علیہ وسلم ने नाखुन व मूऐ मुबारक (दाढी शरीफ़ के बाल) काटे वोह मैंने लेकर इस दिन के लिए उठा रखे - जब मैं मर जाऊँ तो कमीज़ सर से

انی صحبت رسول اللہ صلی اللہ
تعالیٰ علیہ وسلم فخرج لحاجتہ فتبعتہ
باداوۃ فکسانی احد ثوبیہ الذی یلی
جسدہ فخبأتہ لھذا الیوم واخذ
رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم
من اظفارہ وشعرہ ذات یوم فاخذتہ
فخباتہ لھذا الیوم فاذا انا مت
فاجعل ذالک القمیص دون کفنی
مما یلی جسدی وخذ ذلک الشعر
والاظفار فاجعلہ فی فمی وعلی
عینی ومواضع السجود منی

صلہ हज़रत जाबिर —رضی اللہ عنہ— रिवायत करते है रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक के पास उसे दफ़न कर देने के बाद पहुँचे आप ने उसे निकलवाया, लुआबे दहन (थूक मुबारक) उस के मुँह में ड़ाला और अपना कुरता उसे पहेनाया ।

(बुखारी शरीफ़, हदीस नं 1190 जि. 1 स. 489) ! फारूक !

पैर तक मेरे कफ़न के नींचे बदन से नज़दीक रखना - मूए मुबारक व नाखुने मुकद्दस को मेरे मुँह में और आँखों और पेशानी वगैरा सजदे की जगह पर रखना ।

(26) हाकिम ने "मुस्तदरिक" में हमीद बिन अब्दुलरहमान के ज़रिये से रिवायत कि - - - - - - - - - -

قال حدثنا الحسن بن صالح عن هارون بن سعيد عن ابي وائل قال كان عند علي رضي الله تعالى عنه مسك فاوصى ان يحنط به وقال هو فضل حنوط رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم سكت عليه الحاكم

यानी मौला अली كرم الله تعالى وجهه के पास मुश्क (कस्तूरी) था । (उन्होंने) वसीयत फ़रमाई के मेरे कफ़न में येह मुश्क इस्तेमाल किया जाए, और फ़रमाया कि येह रसूलुल्लाह—صلى الله تعالى عليه وسلم— के मैय्यत में जो खुशबू लगाई गई थी येह मुश्क उस की बची हुई है ।

(27) "इब्नुल सुकन" ने सफ़वान बिन हेरह से रिवायत की के --

قال قال ثابت البناني قال لي انس بن مالك رضي الله تعالى عنه هذه شعرة من شعر رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم فضعها تحت لساني قال فوضعتها تحت لسانه فدفن وهي تحت لسانه ذكره في الاصابة

यानी साबित बनानी फ़रमाते है, मुझ से अनस बिन मालिक رضي الله عنه ने फ़रमाया येह मूए मुबारक (दाड़ी शरीफ़ का बाल) सैय्यदे आलम صلى الله عليه وسلم —का है । इसे मेरी ज़बान के नीचे रख दो, मैंने रख दिया, वोह यूँ ही दफ़न किये गये के मूए मुबारक (हुज़ूर की दाड़ी का बाल शरीफ़) उन की ज़बान के नींचे था ।

(28) "बयहकी" व इब्ने असाकर" इमाम मुहम्मद बिन सीरीन से रिवायत करते है ---------

عن انس بن مالك انه كان عنده --

यानी अनस बिन मालिक—

के पास हुज़ूर सैय्यदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم की एक छड़ी थी वोह उन के सीने पर कमीज़ के नींचे उन के साथ दफ़न की गई।

عصیة لرسول اللہ صلے اللہ تعالی علیہ وسلم فمات فدفنت معہ بین جنبیہ وبین قمیصہ

इन (सहाबा-ए-किराम) के सिवा सैकड़ों उन की पैरवी करने वालों की मिसाले हैं जो वाकेआत व हदीसों की किताबों में मिलेंगे। ज़ाहिर हैं के जैसे लीखी हुई (क़ुरआन की) आयतों व अहादीस की तअज़ीम फ़र्ज़ है यूँही हुज़ूर पुरनूर صلی اللہ علیہ وسلم की चादर व कमीज़ खास कर नाखुन व मूऐ (बाल) मुबारक की (तअज़ीम फर्ज़ है) के हुज़ूर सैय्यदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم के जिस्मे मुबारक के हिस्से है। وعلی کل جزءٍ جزءٍ وشعرة شعرة منہ وبارک وسلم तो सहाबा-ए-किराम —— رضی اللہ تعالے عنہم اجمعین का इन तरीकों से तबर्रुक (हासिल) करना और हुज़ूर पुरनूर का इसे जाइज़ व मुकर्रर रखना बल्कि ब नफ़्से नफ़ीस (खुद) येह तरीका फ़रमाना इस बात व काम के जाईज़ होने में साफ़ खुली हुई (सब से बड़ी) दलील है। और क़ुरआने अज़ीम (कफ़न पर) लिखना और उस की तअज़ीम ज़्यादा मानना हरगिज़ गलत नहीं हो सकता कि (अगर) जब मना होने की वजह गन्दगी है तो वोह जिस तरह क़ुरआन लिखने के लिये मना होगी यूँही (हुज़ूर के) लिबास व हुज़ूरे अकदस के जिस्मे मुबारक के हिस्से (जैसे बाल शरीफ़, नाखुन शरीफ़ वगैरा) के लिये बिल्कुल ना जाइज़ व मना हो। फिर सही हदीसों से इस का जाइज़ होना, बल्कि इस पर अमल होना साबित, और साफ़ व ज़ाहिर दलीलों से इस के जाइज़ होने का हुक्म, इस के जाइज़ की दलिल काफ़ी, ولله الحمد۔

तीसरा मक़ाम

कफ़न पर दुआइया कलमात, व आयतें लिखने में जो शक किया जा सकता था - वोह यही था के मैय्यत का बदन फट्टा है। उस से पीप वगैरा निकलता है तो गन्दगी उसे ज़रूर लगेगी। इस शक को बेहतरीन तरीके से "इमाम नफ़ीस" ने दूर फ़रमा दिया कि - फ़ारूके आज़म——

جیس فی سبیل اللہ تعالیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ के अस्तबल में घोड़ों की रानों पर लिखा था जो शक गन्दगी लगने का यहाँ है वहाँ भी था । तो मालूम हुआ के एक गैर मौजूद काम का शक, नेक नीयत, व सही गर्ज़ मौजूद होने पर आड़ नही आता । मगर एक बाद के आलिम शाफ़ी मस्लक के इमाम इब्ने हजर मक्की —رحمۃ اللہ تعالیٰ— ने इस जवाब में शक किया के (घोड़ों) की रान पर लिखना सिर्फ़ पहेचान के लिए था । और कफ़न पर लिखने से तबर्रूक हासिल करना मकसद होता है तो यहाँ कलमाते मोअज़्ज़मा अपने हाल पर बाकी हैं । उन्हें नजासते ज़ाहिर पर पेश करने की इजाज़त न होगी ।

—اقول— इस के अलावा इस से के येह जुदा करना यहाँ हरगिज़ फ़ाएदा पहुँचाने वाला नहीं —کما بینتہ فیما علقت علی رد المحتار— दूसरे मुकाम में जो बेहतरीन अहदीसे हम ने ज़िक्र की वोह तो खास तबर्रूक के वास्ते थी तो शक खत्म, और इमाम नसीर की दलील सही और शक को खत्म करने वाली ।

-ثم اقول— बल्कि खूद कुरआने अज़ीम में जैसे "सुरए फ़ातेहा" व आयते शिफ़ा वगैरा शिफ़ा (फ़ायदा) हासिल करने की नियत से लिखकर, धो कर पीना पहले के बुज़ुर्गों व उन के बाद के बुज़ुर्गों से लगा तार बगैर किसी एतराज़ के चला आ रहा है ।

अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہما ने पेट[1] वाली औरत के बच्चा जन्ने के वक़्त दर्द हो तो उस के लिए फ़रमाया ----

क़ुरआन मजीद में से कुछ लिख —تکتب لہا شیئ من القرآن وتسقی— कर औरत को पीलाऐं ।

---

1 बल्कि वय्लमी ने "मस्नदुल फ़िरदोस" में (अब्दुल्लाह बिन अब्बास) से रिवायत की के नबी ने फ़रमाया ---

जिस औरत को (बच्चा) जन्ने में दुश्वरी हो पाकीज़ा बरतन पर येह आयतें लिख कर धो कर उसे पीलाए और उस के पेट और शर्मगाह पर छिड़कें -- (आला हज़रत)

इमाम अहमद बिन हमबल ने उस के लिए (बच्चा जनते वक़्त औरत के लिए) हदीस इब्ने अब्बास (से) तकलीफ़ के वक़्त की दुआ और दो आयतें लिखी (वोह दुआ और आयतें येह है)

—— لا الٰہ الا اللہ الحلیم الکریم سبحن اللہ رب اللہ رب العرش العظیم ——
—— الحمد للہ رب العالمین کانھم لوم یرونھا لم یلبثوا الا عشیتہ او ——
—— ضحٰھا کانھم لوم یرون مایوعدون لم یلبثوا الا ساعۃ من نھار —

इमाम अहमद बिन हमबल के साहबजादे इमाम अब्दुल्लाह बिन अहमद इसे ज़ाफरान से लिखते । इमाम हाफ़िज़ सक्का अहमद बिन अली अबूबकर मरवज़ी, ने कहा मैंने उन को बार बार इसे लिखते देखा

(رواہ الامام الثقۃ الحافظ ابوعلی الحسن بن علی الخلال المکی)

हालाँकि मालूम है के पानी बदन का हिस्सा नहीं होता और उस का मसाना से गुज़र कर पेशाब के रास्ते से निकलना ज़रूर है । बल्कि खूद (आबे) ज़मज़म शरीफ़ क्या तबर्रूक, तअज़ीम के लाएक नहीं । और लिहाज़ा (इसी लिए) उस से इस्तिन्ज़ा करना (शर्मगाह धोना) मना है "दुर्रे मुख्तार में है ---

———— یکرہ الاستنجاء بماء زمزم لا الاغتسال ————

"रददुल मुख्तार" में है ----

ردالمختار میں ہے وکذا ازالۃ النجاسۃ الحقیقۃ من ثوبہ او بدنہ حتی ذکر بعض العلماء تحریم ذلک ————

और उस का पीना आला दरजे की सुन्नत बल्कि पेट भर पीना ख़ालिस ईमान की अलामत । "तारीखे बुखारी" व "सुनन इब्ने माजा" व "सही मुस्तदरिक" में बसन्दे हसन हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہما से है (कि) रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم फ़रमाते है ----

हम में और मुनाफ़िकों में फ़र्क की निशानी येह है कि वोह कोख़	آیۃ ما بیننا وبین المنافقین انھم لا ————

(पेट) भर कर आबे ज़मज़म नहीं पीते || —— يتضلعون من زمزم

बल्कि — بحمد اللہ تعالیٰ — हमारी तकरीर से इमाम इब्ने हजर शाफ़ई और उन की पैरवी करने वालों का इस मस्अले में खिलाफ़ होना ही खत्म हो गया ----

हम ने कई सही हदीसों से इसे साबित कर दिया और इमाम नसीर व इमाम क़ासिम सफ़ार ने (जो) खूद हमारे अइम्मा-ए-मुजतहेदीन से है उन्होंने इस के जाइज़ होने का हुक्म दिया है और अगर कोई ज़्यादा अहतियात की वजह से कफ़न पर लिखने या लिखा हुआ कफ़न देने से परहेज़ करे तो दूसरी बात है। इस बहेस को मुकम्मल तफ़सील से फ़क़ीर ने "तअलीकात रद्दलमुख्तार" में ज़िक्र किया है। इस का यहाँ ज़िक्र ज़रूरी नहीं।

चौथा मकाम

जब कफ़न पर दुआए वगैरा तबर्रूक के तौर पर लिखना जाइज़ होना फ़िक़हा की बातों व हदीसों से साबित है तो सिजरह शरीफ़ रखाना जो आजकल रखा जाता है इसी तरह है बल्कि पहले से बेहतर कि इस में खुदा वन्दे कुद्दुस के महबूबों — علیہم التحیۃ والثنا — से वसीला और तबर्रूक है। बेशक येह बहुत बेहतर व पसंदीदह है।

तफ़सीरे तबरी व शरह मवाहिबुल दुनिया अल्लामा ज़रकानी में हैं ------

जब असहाबे कहेफ़ के — नाम लिख कर आग में ड़ाल दिये जाए तो आग बूझ जाती है।	اذا كتب اسماء اهل الكهف فى شيئ والقى فى النار انطفئت -

"तफ़सीरे नेशापूरी" अल्लामा हसन बिन मुहम्मद हुसैन निज़ामुद्दीन में है ------

यानी अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत है कि असहाबे कहेफ़ के नाम नफ़ा हासिल करने और नुकसान	عن ابن عباس ان اسماء اصحاب الكهف تصلح للطلب والهرب واطفاء الحريق تكتب فى خرقة

ويرمى بها في وسط النار و
لبكاء الطفل تكتب ولوضع تحت
راسه في المهد وللحرث تكتب
على القرطاس وترفع على خشب
منصوب في وسط الزرع و
للضربان وللحمى المثلثة والصداع
والغنى والجاه والدخول على
السلاطين لتشد على الفخذ اليمنى
ولعسر الولادة لتشد على فخذها
الايسر ولحفظ المال والركوب في
البحر والنجاة من القتل ——

को दूर करने और आग को बुझाने के वास्ते है। एक कागज़ पर लिख कर बीच आग में ड़ाल दें (तो आग बुझ जाए) और बच्चा रोता हो तो लिख कर झुले में उस के सर के नीचे रख दें और खेती की हिफ़ाज़त के लिये कागज़ पर लिख कर बीच खेत में एक लकड़ी गाड़ कर उस पर बान्ध दें और रगे तपकने और बुखार और सर दर्द और दौलत हासिल करने व शान व शौकत और बादशाहों के पास जाने के लिए दहिनी रान पर बान्धे और औरत के बच्चा जन्ने की तकलीफ़ के वक़्त बाऐं रान पर (बान्धे) और माल की हिफ़ाज़त और दरया की सवारी और क़त्ल से निजात के लिए भी। [1]

इमाम इब्ने हजर मक्की "सवाइके मुहर्रीक" में नक़्ल फ़रमाते है -----

जब इमाम अली रज़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہ नेशापूर में तशरीफ़ लाए (आप के) चेहरह मुबारक के **सामने** एक पर्दा था। हदीस के बहुत से हाफ़िज़ हज़रात (जैसे) इमाम अबू ज़राअ राज़ी, व इमाम मुहम्मद बिन असलम तूसी और उन के साथ बेशुमार इल्मे हदीस को चाहने वाले (इमाम

1 असहाबे कहेफ़ चन्द भाई हैं जो हज़रत ईसा (की उम्मत के औलिया से है उन के ज़माने में एक बादशाह था जिस का नाम "दकयानूस" था वोह खूद को खुदा समझता और लोगों से सजदा करवाता जो सजदा न करते तो उन्हें कत्ल कर देता चुनानचे असहाबे कहफ़ ने उसे सजदा करना गवारा न किया और वतन को छोड़ दिया वो एक गार में सोए और तीन सौ बरस के बाद जागे, असहाबे कहेफ़ आज भी उस गार में ज़िन्दा हैं --- इन के वाकेअ की तफ़सील कुरआने पाक में मौजूद है --- (फारूक)

अली रज़ा, की) ख़िदमते अनवार में हाज़िर हुए और गिड़गिड़ा कर अर्ज़ कि के अपना जमाले मुबारक (चेहरह मुबारक) हमें दिखाईये और अपने आबाए किराम (बाप, दादा, से रिवायतं की हुई) एक हदीस हमारे सामने रिवायत फ़रमाइये । इमाम (अली रज़ा) ने सवारी रोकी और गुलामों को हुक्म दिया कि पर्दा हटालें । लोगों की आखें आप के चेहरह मुबारक के दीदार से ठंड़ी हुई (लोगों ने देखा की) दो गेसू (बाल की लट) शाने पर लटक रही थी पर्दा हटते ही लोगों की येह हालत हुई के कोई चिल्लाता है - कोई रोता है - कोई खाक पर लोटता है - कोई सवारी मुकद्दस (यानी घोड़े) का पैर चुमता है । इत्ने में उलमा ने आवाज़ दी, खामोश, सब लोग खामोश हो गए । दोनों इमाम (इमाम अबू ज़राअ राज़ी, और इमाम मुहम्मद बिन असलम तूसी) ने हुज़ूर (इमाम अली रज़ा-(رضی اللہ عنہ) से कोई हदीस रिवायत करने को अर्ज़ की हुज़ूर (इमाम अली रज़ा) ने फ़रमाया ----

حدثنی ابی موسی الکاظم عن ابیہ جعفر الصادق عن ابیہ محمد ن الباقر عن ابیہ زین العابدین عن ابیہ الحسین عن ابیہ علی ابن طالب رضی اللہ تعالیٰ عنہم قال حدثنی جبرئیل قال سمعت رب العزۃ یقول لا الہ الا اللہ حصنی فمن قال دخل حصنی ومن ——— دخل حصنی امن عذابی ———

यानी इमाम अली रज़ा, इमाम मूसा काज़िम से वोह इमाम मुहम्मद बाकर से वोह इमाम ज़ैनुल आबेदीन से वोह इमाम हुसैन से वोह अली मुरतज़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہم से रिवायत फ़रमाते हैं कि मेरे प्यारे मेरी आखों की ठन्ड़क रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने मुझ से हदीस बयान फ़रमाई के उन से जिबरील ने अर्ज़ कि के मैंने अल्लाह — عزوجل — को फ़रमाते सुना कि لا الہ الا اللہ मेरा किला है तो जिसने इसे पढ़ा वोह मेरे किले में दाखिल हुआ - मेरे अज़ाब से अमान (हिफ़ाज़त) में रहा ।

येह हदीस रिवायत फ़रमा कर हुज़ूर (इमाम अली रजा رضی) आगे बड़े और पर्दा छोड़ दिया गया । दवातों वाले (यानी जो कागज़ कलम लेकर) — येह इरशाद (हदीस)लिख करहे थे वोह लोग गीने गये तो वोह बीस

हज़ार (20,000) से ज़्यादा थे ।

इमाम अहमद बिन हमबल ---رضی اللہ تعالیٰ عنہ--- ने फ़रमाया-

यानी येह मुबारक हदीस (और इस की सनद) मजनून (पागल) पर पढ़ो तो ज़रूर उसे पागल पन से शिफ़ा हो ।	لو قرأت هذا الاسناد على مجنون لبرئ من جنته

اقول—वाक़ेअ के मुताबिक जब असहाबे कहेफ़—قدست اسرارہم—के नामों में वोह बरकते है (जो पहले बयान हुई) हालॉके वोह हज़रत ईसा (की उम्मत के औलिया हैं तो हुज़ूर मुहम्मद—صلی اللہ علیہ وسلم—की उम्मत के औलिया-ए-किराम صلوات اللہ تعالیٰ وسلامہ علیہ وعلیہم اجمعین के नामों की बरकत का क्या कहना - उन के नामों की बरकत क्या गीनी जा सके । अए शख़्स तो नहीं जानता के नाम क्या है ----------

कफ़न पर लिखना के हमारे अइम्मा ने जिसे जाइज़ फ़रमाया और मगफ़ेरत की उम्मीद बताया और कुछ शफ़ीयों को इस में शक आया -- सिजरह तैय्यबा में उस का ख़्याल भी ज़रूरी नहीं - क्या ज़रूर के कफ़न में ही रखे बल्कि क़ब्र में मेहराब बना कर रखे, चाहे मैय्यत के सिरहाने हो कि नकीरैन (क़ब्र में सवाल पुछने वाले फ़रिश्ते) पाएती की तरफ़ से आते हैं - उनकी नज़र के सामने हो । चाहे किबले की जानिब क मैय्यत के सामने रहे और उस को सुकून व इतमीनान व मैय्यत के जवाब में मदद का ज़रिया हो।

शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब ने भी रिसाला (अपनी एक छोटी किताब) "फ़ैज़े आम" में सिजरह क़ब्र में रखने को बुज़ुर्गाने दीन का मअमूल (हमेशा का आमल) बता कर सिरहाने मेहराब में रखना पसंद किया । येह बात बहुत फ़ैली हुई है, बल्कि हमारी तहकीक (Resurch) से साबित हुआ के कफ़न में रखने में जो कलामे फ़िकहा बताया गया वोह बाद के शाफ़ी मस्लक के हैं । हमारे अइम्मा (इमामों) के तौर पर येह भी सही हैं हॉ मेहराब में रखना ज़्यादा मुनासिब व अच्छा है ।—واللہ تعالیٰ اعلم

रज़ा एकेडमी ने

सरकार अअ्ला हज़रत के १०० रिसालों का सेट (उर्दू) में

एक साथ शाया करने का शरफ़ हासिल किया है। ज़रूरत मंद हज़रात

फ़ारूक़िया बुक डिपो

४२२, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, दिल्ली - ६
से राब्ता क़ाएम करें।